Volume-6, No. 2 Aug.-2019, pp. Hin.22-31

प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी की भाषा शैली का प्रभाव

श्री राजेश भाटी, (शोधार्थी)
एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद, उत्तर–प्रदेश भारत।
डॉ० संजय मिश्र राजनीति विज्ञान विभाग
एम.एम.एच. कॉलिज गाजियाबाद, उ०प्र० भारत
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उ०प्र० भारत

मानव अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन का प्रयोग करता है उसे सरल शब्दों में भाषा की संज्ञा दी जाती है। मानव विचारों के द्वारा अपने समाज के साथ संपर्क स्थापित करता है और यह विचार भाषा के द्वारा ही एक व्यक्ति से दूसरे तक पहुंचते हैं। मनन–चिन्तन और विचार की अद्भुद क्षमता जो मानव को अन्य प्राणियों से अलग बनाती है, उन्हें भाषा से ही सम्पादित किया जाता है। मानव को ऋषि, देवता या विद्वान बनाने का कार्य भाषा की दिव्य ज्योति से संभव होता है। जर्मन विद्वान सुसमिल्श भाषा को मानवकृत न स्वीकारते हुए इसे परमात्मा का साक्षात उपहार मानते हैं। वस्तुतः भाषा को "मानव शरीर में दैवी अंश"[1] भी कहा जाता है।
मुख्य शब्द– नरेन्द्र मोदी, भाषा शैली, प्रभावोत्पादकता, सम्प्रेषणीयता, भाषणों के अंश।

भाषा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह प्रयोक्ता द्वारा चिंतित अभिष्ट अर्थ को दूसरे तक ठीक से पहुँचाकर उसे यथार्थ बोध करवाए और उसके मनो–मस्तिष्क में अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न कर सके। ऐसे में सशक्त संवाद का माध्यम बनते हुए प्रभावी संचार कर पाने के भाषायी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा का प्रभावशाली होना अनिवार्य हो जाता है। भाषा की यह प्रभावोत्पादकता वक्ता की भाषा का गुण है। लेकिन इसे, श्रोता पर पड़ने वाले प्रभाव को माप कर ही जाना जा सकता है। भले ही भाषा की सफलता वक्ता एवं श्रोता दोनों की क्षमताओं पर बराबर निर्भर करती हो लेकिन भाषा को प्रभावशाली बनाना अकेले वक्ता का ही दायित्व है।

एक सक्षम सेनानायक की प्रभावशाली भाषा से निरंतर उत्साहित सैनिक ही अपने अदम्य साहस और बल का भली–भाँति प्रयोग कर युद्ध में अपनी सशक्त भूमिका सुनिश्चित करता है। ऐसा उत्कृष्ट प्रदर्शन सदैव सेनापति की भाषिक क्षमताओं से ही जन्म लेता है। इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ समुदाय विशेष को एकत्रित कर जनसमूह का नेतृत्व प्राप्त करने के लिए राजाओं, मंत्रियों, सेनापतियों, तानाशाहों, बागियों एवं आन्दोलनकारियों ने अपनी वाणी का सफल प्रयोग किया है। सिकन्दर, समुन्द्र गुप्त से लेकर नेपोलियन बोनापार्ट, मुसोलिनी, हिटलर आदि सभी ने अपनी भाषा शैली से ही जन के मन को जीतकर अपने लिए सत्ता का मार्ग प्रशस्त किया है। इसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो यह भी दृष्टिगोचर होता है कि शासन और सत्ता के केन्द्र तक पहुँचने में नेताओं की वाणी ने सदैव सकारात्मक भूमिका निभायी है। अमेरिका में बराक ओबामा ने देश का पहला अश्वेत राष्ट्रपति बनने की संघर्षपूर्ण यात्रा के दौरान अपने भाषणों में भाषा का चमत्कारिक प्रयोग किया था। ब्रिटेन में विस्टन चर्चिल, मार्गरेट थैचर, टोनी ब्लेयर सरीखे प्रधानमंत्रियों ने अपनी कलम और वाणी की अद्भुत प्रतिभा के बल पर न केवल सत्ता प्राप्त की अपितु इसी आधार पर स्वयं को एक कुशल नेता भी सिद्ध किया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो नरेन्द्र मोदी का भारत की राजनीति के परिदृश्य में उदीयमान होना जमीन से उठकर ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ऐसा नहीं है कि यह सब अकस्मात हुआ हो। अपितु इस सफलता के पीछे अनेक प्रयास और सुखद संयोग भी अन्तर्निहित हैं। स्वयं नरेन्द्र मोदी की प्रभावशाली भाषा भी ऐसे कारकों में से एक है, जिसके कारण उन्होंने यह स्थान प्राप्त किया है। अहिन्दीभाषी पृष्ठभूमि से आने वाले नरेन्द्र मोदी ने हिन्दी के सफलतम प्रयोग से राष्ट्रीय राजनीति में

2014 के सत्ता परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया तथा भारतीय लोकतंत्र के सर्वोच्च पद तक की लम्बी गरिमामयी यात्रा में जिस प्रतिभा का सर्वाधिक प्रयोग किया वह उनकी भाषा ही है। नरेन्द्र मोदी की भाषिक प्रभावोत्पादकता ने मतदाताओं के अंतर्मन में ठीक वैसे ही विचार उत्पन्न किये जैसे वह चाहते थे। इस प्रचार अभियान की सफलता पर 16 मई 2014 को उस समय आधिकारिक मोहर लग गयी, जब भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया। आज भी यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता है कि उपर्युक्त अप्रत्याशित विजय भारतीय जनता पार्टी की सफलता थी या यह सत्तारूढ़ कांग्रेस नीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की विफलता थी। लेकिन दोनों सामान्य कारणों को मूर्त रूप देकर धरातल पर उतारने में नरेन्द्र मोदी की भाषा–शैली के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। वस्तुतः प्रकृति प्रदत्त वाणी और मानव द्वारा विकसित भाषा को उन शक्तियों में गिना जा सकता है, जिनके बल पर नरेन्द्र मोदी ने देश के प्रधानमंत्री जैसे गरिमामयी पद को सहजता से प्राप्त कर लिया।

नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न अवसरों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। अवसर के अनुरूप उनकी भूमिका में परिवर्तन आता रहता है। विदेशी दौरों में आधिकाधिक मुलाकातों के समय उनका व्यवहार एक कूटनीतिज्ञ जैसा होना स्वाभाविक है। लेकिन वहीं भारतीय मूल के लोगों के बीच वह एक सांस्कृतिक अग्रदूत की भूमिका में नजर आते हैं। विश्वविद्यालयों के दीक्षान्त समारोहों में वह एक शिक्षक से दिखायी पड़ते हैं। सैनिकों को उनमें अपना कमांडर दिखायी देता है तो पार्टी के अधिवेशन में वह परिपक्व राजनेता होते हैं। इस प्रकार की विभिन्न भूमिका सार्वजनिक जीवन में हर छोटे–बड़े व्यक्ति को निभानी पड़ती है और प्रायः लोग इन सभी स्थानों पर लिखी–लिखाई बातें कहकर रस्म–अदाई भर, कर दिया करते हैं। विशेषकर भारत में प्रधानमंत्री जैसे पद पर बैठे व्यक्ति से तो यही आशा की जाती रही है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस परिपाटी को अस्वीकार करते हुए लगभग हमेशा अपने मौलिक विचारों को अपनी ही भाषा से न केवल प्रकट करते हैं, अपितु अपनी विशिष्ट शैली से उन विचारों की सम्प्रेषणीयता का मार्ग प्रशस्त करते हुए लक्षित श्रोताओं के अतर्मन को विचारों से प्रभावित भी कर पाते हैं। नरेन्द्र मोदी की यही भाषिक प्रभावोत्पादकता उनकी भाषा–शैली की विशिष्टता है।

हिन्दी सीखने की कहानी– नरेन्द्र मोदी की प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम और दैनिक व्यवहार की भाषा गुजराती थी और उस क्षेत्र में हिन्दी भाषियों की कोई विशेष उपस्थिति नहीं थी। नरेन्द्र मोदी अपने पिता का उनके काम में हाथ बंटाने रेलवे स्टेशन जाया करते थे वह स्वीकारते हैं कि "मैं ट्रेन के कम्पार्टमेंट का वह छोट–सा लड़का था जो चाय पिलाता और पैसे लेता था।"[2] स्टेशन पर आने–जाने वाली गाड़ी के यात्रियों के साथ होने वाले सामान्य वार्तालाप से वह बोल–चाल की हिन्दी को भली–भाँति जानने–समझने लगे थे। इसके अतिरिक्त वड के छोटे से पुस्तकालय में रखी हिन्दी की पुस्तकों ने भी उन्हें हिन्दी का सानिध्य प्रदान किया। पुस्तकों से इस लगाव को स्वीकार करते हुए नरेन्द्र मोदी कहते हैं "मेरे गाँव मेरी ऐसी छवि थी कि मैं कहीं न मिलूं तो लाइब्रेरी में छानबीन कर लें। वहाँ तो मैं निश्चित रूप से मिलूँगा ही।"[3]

गुजराती भाषी नरेन्द्र मोदी के हिन्दी सीखने की रोचक कहानी को उन्होंने भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में साझा किया– "मैं जब राजनीतिक जीवन में आया, तो पहली बार गुजरात के बाहर काम करने का अवसर मिला। हम जानते हैं कि हमारे गुजराती लोग कैसी हिन्दी बोलते हैं। तो लोग मजाक भी उड़ाते हैं। लेकिन मैं जब बोलता था तो लोग मानते थे और मुझे पूछते थे कि मोदी जी आप हिन्दी भाषा सीखे कहाँ से, आप हिन्दी इतनी अच्छी बोलते कैसे हैं? अब हम तो वही पढ़े हैं, जो सामान्य रूप से पढ़ने को मिलता है, थोड़ा स्कूल में पढ़ाया जाता है, उससे ज्यादा नहीं लेकिन मुझे चाय बेचते–बेचते सीखने का अवसर मिल गया। क्योंकि मेरे गाँव में उत्तर प्रदेश के व्यापारी, जो मुंबई में दूध का व्यापार करते थे, उनके एजेंट और ज्यादातर उत्तर प्रदेश के लोग हुआ करते थे। वो हमारे गाँव के किसानों से भैंस लेने के लिए आया करते थे और दूध देने वाली भैसों को वो ट्रेन के डिब्बे में मुंबई ले जाते थे और दूध मुंबई में बेचते थे और जब भैंस दूध देना बंद करती थी तो फिर वो गाँव में आकर के छोड़ जाते थे, उसके कांट्रेक्ट के पैसे मिलते थे। तो ज्यादातर रेलवे स्टेशन पर ये मालगाड़ी में भैंसो को लाने–ले जाने का कारोबार हमेशा चलता रहता था, उस कारोबार को ज्यादातर करने वाले लोग उत्तर प्रदेश के हुआ करते थे और मैं उनको

चाय बेचने जाता था। उनको गुजराती नहीं आती थी मुझे हिन्दी जाने बिना चारा नहीं था, तो चाय ने मुझे हिन्दी सिखा दी थी।"

साहित्यिक हिन्दी के व्याकरणिक नियमों से उनका अच्छा परिचय बी.एन. हाईस्कूल में हुआ। वहां श्री चन्द्रकांत दबे हिन्दी पढ़ाया करते थे। यह वही चन्द्रकांत दबे थे जो उस समय वडगनर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा का संचालन किया करते थे, जब नरेन्द्र मोदी ने शाखा में आना प्रारम्भ किया।[4] उनके पिता के एक मित्र बेलजी भाई चौधरी उनके शिक्षक थे। साहित्य में नरेन्द्र मोदी की रूचि देखकर वे प्रायः उनके पिता को कहा करते थे।– "नरेन्द्र मोदी की उसे साहित्य की ओर ले जाओ। उसकी ग्रहण शक्ति अच्छी है। वह इंग्लिश भाषा भी अच्छे से सखी सकता है।"[5]

अपने जीवन के विगत उनहत्तर वर्षों की इस लंबी यात्रा के बीच नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व के साथ–साथ उनकी भाषा–शैली भी निरंतर परिमार्जित और परिष्कृत होती रही है। वह कहते हैं– "मैं जीवन में एक परिव्राजक रहा हूँ मेरा सौभाग्य रहा है कि करीब–करीब हिन्दुस्तान के सभी जिलों में मुझे रात गुजारने का अवसर मिला है।"[6] इस घुमक्कड़ जीवन–शैली ने उनके व्यक्तित्व के साथ–साथ उनकी भाषा–शैली को भी प्रभावित किया है। लेकिन यह भी सत्य है कि परिपक्वता के बावजूद भी उसका आक्रमक रुख कहीं से भी कमतर नहीं हुआ और वैसा ही बना हुआ है।

चुनावी रैली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाषा शैली

चुनावी रैली– नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी, समय–समय पर पार्टी ने राज्य विधान सभाओं और स्थानीय निकायों के निर्वाचन में नरेन्द्र मोदी के करिश्माई व्यक्तितव का मतदाताओं को रिझाने के लिए प्रयोग किया है। इन चुनावी रैलियों में उनकी भाषा–शैली परम्परागत चुनावी भाषा–शैली से कई मायनों में भिन्न रही। प्रधानमंत्री बनने के बाद विभिन्न चुनावी रैलियों में उनके द्वारा दिए गए भाषणों में उनकी विशिष्ट भाषा–शैली का विवेचन अग्रलिखित है।

क्षेत्रीय बोली को अपने भाषणों में सम्मिलित करना कोई मोदी से सीखे। मतदाताओं के अंतर्मन में वांछित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए उनसे उन्हीं के स्तर पर जाकर मानसिक संपर्क बनाना अपेक्षित होता है। नरेन्द्र मोदी स्वीकारते हैं कि मनो–मस्तिष्क में विद्युतीय प्रभाव उत्पन्न करने के लिए क्षेत्रीय भाषा–बोली का प्रयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है–

"भाषा का गर्व कितना होता है। मैं तो सार्वजनिक जीवन में काम करता हूँ। कभी तमिलनाडु चला जाऊँ और 'वाणक्कम' बोल दूं, और मैं देखता हूँ कि पूरे तमिलनाडु में 'Electrifying Effect' हो जाता है। भाषा की ये ताकत होती है। बंगाल का कोई व्यक्ति मिले और 'भालो आसी' पूछ लिया, तो उसको प्रसन्नता हो जाती है, कोई महाराष्ट्र का व्यक्ति मिले, 'कसाकाय' काय चलता है' एकदम प्रसन्न हो जाता है, भाषा की अपनी एक ताकत होती है और इसलिए हमारे देश के पास इतनी समृद्धि है, इतनी विशेषता है, मातृभाषा के रूप में हर राज्य के पास ऐसा अनमोल खजाना है, उसको हम कैसे जोडे और जोड़ने में हिन्दी भाषा एक सूत्रधार का काम कैसे करे उस पर अगर हम बल देंगे हमारी भाषा और ताकतवर बनती जाएगी और उस दिशा में, हम प्रयास कर सकते हैं।[7]"

चुनावी सभाओं को संबोधित करते समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्थानीय बोली–भाषा के अभिवादन, शब्दों, वाक्यों, उद्घोषों का ही नहीं अपितु उनके साहित्य का भी आश्रय लेते हैं। इसका एक सशक्त उदाहरण बिहार विधान सभा चुनाव के दौरान उनके द्वारा दरभंगा में आयोजित चुनावी जनसभा को संबोधित करते समय देखा गया।

बिहार के मिथिलांचल के स्थानीय जीवन का वर्णन करते हुए मैथिली व हिन्दी के प्रख्यात कवि और लेखक आचार्य सोमदेव ने लिखा था–

"पग–पग पोखर माछ मखान, सरस मधुर मुसकी मुख पान।
विद्या वैभव शान्ति प्रतीक, सरस क्षेत्र मिथिलांचल थीक।।"

अर्थात् यहाँ हर कदम पर आपको तालाब मछली और मखाने मिलेंगे। लोग प्यार से बोलते हैं और पान चबाना पसन्द करते हैं, मिथिलांचल विद्या, वैभव और शांति का प्रतीक एक सुखद क्षेत्र है। ये पंक्तियाँ आज एक नारे की तरह यहाँ के जन–जन की जुबान पर हैं और इस क्षेत्र का परिचय बन गई है। इनमें जिसे 'मखान' शब्द का वर्णन है, वह इस क्षेत्र की पहचान हैं क्योंकि इस क्षेत्र में मखाने की स्वाभाविक खेती होती है। यह शब्द संस्कृत के मख और अन्न शब्द से मिलकर बना है। मख का अर्थ है, यज्ञ और अन्न माने अनाज अर्थात् यज्ञादि में प्रयुक्त होने वाला पवित्र

अनाज। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस क्षेत्र की एक चुनावी रैली में इस प्रसिद्ध पंक्तियों को बदलकर कुछ यूँ पढ़ते हैं–

पग–पग पोखर पान–मखान, सरस बोल मुस्की मुस्कान।

विद्या वैभव शान्ति प्रतीक, ललितनगर मिथिला ठीक।।[8]

चूँकि नरेन्द्र मोदी को ये पंक्तियाँ पढ़कर कहते हुए देखा जा सकता है, तो इस बात की संभावना न के बराबर ही है कि कविता के बोल अनजाने में बदल गए हो। मखाने की पवित्रता को देखते हुए उसे 'माछ' अर्थात् मछली, जिसे अभक्ष्य भी माना जाता है, के साथ न रखने के दृष्टिगत यह बदलाव जान–बूझ के लाया गया प्रतीत होता है। नरेन्द्र मोदी का शाकाहारी होना भी इस तरफ इंगित करता है कि मिथिला के तालाबों में स्वाभाविक मछलीपालन से मत्स्योत्पादन के क्षेत्र में स्थापित पहचान को इस कविता से शायद जानबूझ कर हटाया गया हो। अर्थात् जहाँ एक ओर स्थानीय बोली–भाषा में क्षेत्र विशेष का वर्णन करना नरेन्द्र मोदी की भाषा–शैली का अंग है, वहीं दूसरी तरफ ऐसा करने के लिए सन्दर्भित पंक्तियों में अपनी रूचि–अरूचि को भी समाहित कर लेना उनकी भाषिक विशिष्टता कही जा सकती है।

सम्प्रेषणीयता को सुनिश्चित करने के लिए भाषा को श्रोता के स्तर का होना चाहिए। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि लक्षित श्रोता के अनुकूल शब्द की उस पर वांछित प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। यह अत्यन्त सामान्य बात प्रतीत होती है लेकिन जब इस तथ्य को चुनावी जनसभाओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है, तो सरल–सा प्रतीत होने वाला यह उद्यम अत्यंत जटिल हो जाता है। चुनावी जन सभाओं में समाज के लगभग हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग श्रोता के रूप में बैठे होते हैं। उनके सामाजिक, आर्थिक धार्मिक भाषाई, शैक्षिक एवं परिवेशगत वैविध्य की भांति उनके सरोकार भी परस्पर भिन्न होते हैं। आगे की पंक्ति में बैठा श्रोता एक संभ्रात उद्योगपति होता है, तो उसके संयंत्र में काम करने वाला साधारण श्रमिक भी दूर कहीं किसी वृक्ष की डाली पर बैठकर नरेन्द्र मोदी को सुन रहा होता है। वक्ता के लिए सत्ता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए इनके संभावित योगदान को देखा जाए तो इन दोनों में कोई अंतर नहीं हैं सीधे मतदान वाले लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति यही हैं कि इस प्रकार के वैभिन्य को धारण करने वाले दोनों मतदाताओं के पास उपलब्ध मतों की संख्या एक–एक ही है। चूंकि उद्देश्य की दृष्टि से सफल रहने के लिए उन दोनों के मतों को अपने पक्ष में लाना वक्ता के लिए आवश्यक है, इसलिए सम्प्रेषण की भाषा को दोनों के अनुकूल बनाना उसके लिए तात्कालिक चुनौती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुनावी रैलियों में दिए गए भाषणों का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि वह इन दोनों के प्रति सावधानीपूर्वक अपनी भाषा में परिवर्तन करते रहते हैं। श्रोता के स्तरों के साथ–साथ उनके सरोकारों में भी पर्याप्त विभेद रहता हैं ऐसे में नरेन्द्र मोदी सरोकार के अनुरूप ही अपनी भाषा–शैली को बीच–बीच में बदलते रहते हैं। भाषा के स्तर को एक–सा बनाए रखने संबंधी आदर्शपरक हठ का त्याग कर नरेन्द्र मोदी को प्रायः श्रोता के स्तर पर आकर बोलते हुए देखा जा सकता है।

चुनावी सभाओं में नरेन्द्र मोदी को प्रायः दोतरफा संवाद करते हुए देखा जा सकता है। रैली में उपस्थित लोगों को रैला संवाद का दोतरफा बनाने में बाधा उत्पन्न करता है। विचारों के निर्बाध आवागमन की संपुष्टि (फीड बैक) न होने के कारण वक्ता–श्रोता के मध्य शून्यता के व्याप्त होने का खतरा बढ़ जाता है। शायद इसलिए, एकतरफा संवाद की संप्रेषणीयता को सदैव संदिग्ध माना गया है, चाहे वह कक्षा–कक्ष का व्याख्यान हो अथवा बच्चों को सुनाई जा रही कोई परियों की कहानी हो। संपुष्टि के अभाव में कोई भी संवाद वह चाहे कितना ही सशक्त विचारों से ओत–प्रोत क्यों न हो, धीरे–धीरे बोझिल–सा हो जाता है। संवाद की इस अड़चन को दूर करने के लिए नरेन्द्र मोदी अपनी लोकप्रिय प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। भाषण के बीच–बीच में वह अपनी बात को प्रश्नरूप में रखते हैं। वह प्रश्न को इस प्रकार गढ़ते हैं कि प्रश्न चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो उसका उत्तर सिर्फ हाँ या नहीं में ही हो सकता है।

"पेट्रोल के दाम कम हुए? डीजल के दाम कम हुए?

आपकी जेब में पैसा बच रहा है या नहीं?[9]

दूसरें दलों की आलोचना करते समय शब्दों का चयन आक्रोश से परिपूर्ण रहता है–

एक साल पहले जिन लोगों ने सपना दिखाया था, उन्हीं लोगों ने अपनी पीठ में छुरा घोंपा, सपनों को चूर–चूर कर दिया। दिल्ली की जनता ने लोकसभा चुनाव में दिल्ली को बर्बाद करने

वालों को नहीं बख्शा। विधान सभा चुनाव में भी जनता दिल्ली को बर्बाद करने वालों को कभी पसन्द नहीं करेगी।[10]

आरोप–प्रत्यारोपों के बीच हँसी–ठिठोली के जुमलों का भी प्रयोग होता रहा है। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने नरेन्द्र मोदी के लिए फिल्म थ्री इडियट्स के 'बहती हवा–सा था वो' का पैरोडी के तौर पर प्रयोग किया–

'बहती हवा–सा था वो, गुजरात से आया था वो, काला धन लाने वाला था वो,

कहाँ गया..... उसे ढूंढ़ो.... हमको देश की फिकर सताती.... वो हर वक्त विदेश दौरे लगाता, दाऊद को लाने वाला था..... वो कहाँ गया उसे ढूंढो।"

इस पर नरेन्द्र मोदी कहाँ चुप रहने वाले थे। उन्होंने भी कहा–

"कई साल के बाद बिहार में मनोरंजन देखने को मिल रहा है। लालू–नीतिश के बीच प्रतिस्पर्धा चल रही है। वे थ्री पार्टनर है, यह तो पता था, लेकिन थ्री इडियट्से का गाना क्यों गाया, इस पर आश्चर्य हुआ।

पार्टी अधिवेशन में भाषा–शैली

संगठन के दायित्वों से सक्रिय राजनीति में पहला कदम रखने वाले नरेन्द्र मोदी को 2001 में गुजरात विधन मंडल की बैठक में औपचारिक रूप से उनका नेता चुना गया था। राज्य का मुख्यमंत्री चुने जाते ही उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपनी कटिबद्धता से पार्टी के सहयोगियों को अगवत करा दिया था।

"विधान सभा के अगले चुनाव से पहले हमारे पास महज 500 दिन या 12000 घंटे हैं।"[11]

कम समय के दृष्टिगत अपनी टीम को कड़ी मेहनत करने का संदेश दे रहे नरेन्द्र मोदी की प्राथमिकता जितनी स्पष्ट थी, उनके शब्द भी उसी अनुरूप सम्प्रेषणीयता से ओत–प्रोत थे। "मैं यहां एक–दिवसीय मैच खेलने आया हूँ। मुझे तेज खेलने वाले और प्रदर्शन करने वाले बल्लेबाजों की जरूरत है, जो सीमित ओवर के मैच में अच्छा खेल सकें।"[12] यह छोटा लेकिन रोचक एवं प्रेरणा प्रद संवाद नाटकीयता के माध्यम से गंभीर संदेश सम्प्रेषित कर पाने की उनकी भाषा शैली को इंगित करता है।

पार्टी कार्यकर्त्ताओं को अपनी बात स्पष्ट करने के लिए वह नए–नए प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। उनकी प्रश्नात्मक शैली कार्यकर्त्ताओं को, उनको सुनने के लिए सक्रिय बनाती है तब उनके द्वारा दिए गए उदाहरण आम जीवन से ही शब्द लेते हैं–

"भाइयों–बहनों, हम बूथ के कार्यकर्त्ता हैं और मैं संगठन से जुड़ा कार्यकर्त्ता हूँ, इसलिए मैं संगठन की कुछ बातें भी सार्वजनिक रूप से आपसे कहना चाहता हूँ। भाइयों–बहनों! आंधी कितनी ही तेज क्यों ना हो, डैढ सौ– दो सौ किलोमीटर की स्पीड से आँधी चल रही हो और अगर आप चौराहे पर साइकिल का ट्यूब लेकर खडे हों जाए, तो कितनी भी स्पीड से आँधी चलती होगी तो भी साइकिल की हवा भरेगी? हवा भरने के लिए पंप लगता है कि नहीं लगता है? लगता है कि नहीं लगता है?"[13]

अपने उद्देश्यो के प्रति सजग नरेन्द्र मोदी कार्यकर्त्ताओं को स्पष्ट दिशा–निर्देश देते हैं–

"भाईयो–बहनों, पोलिंग बूथ में भारतीय जनता पार्टी के हर कार्यकर्त्ता का

इस आँधी को मतपेटी तक ले जाना सबसे प्रमुख काम है।

मतपेटी भरेगी कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से,

मतपेटी भरेगी कार्यकर्त्ताओं के संपर्क से,

मतपेटी भरेगी कार्यकत्ताओं के प्रति सामान्य मानवी विश्वास से.....।"[14]

संसद में भाषा–शैली

लोकतंत्र के सर्वोच्च ग्रन्थ संविधान ने प्रधानमंत्री को सरकार के मुखिया के रूप में संसद के प्रति उत्तरदायी घोषित किया है। इसलिए अपने कर्त्तव्यों के सम्यक निर्वहन एवं नई नीतियों के निर्माण–क्रियान्वयन के लिए प्रधानमंत्री द्वारा प्रत्येक पल संसद को विश्वास में लिए रखना अपेक्षित होता है। स्वस्थ लोकतंत्र में यह विश्वास संसद में दिए गए भाषणों द्वारा ही जागृत किया जाता है संसद के भीतर बात चाहे तथ्यों के प्रकटीकरण की हो अथवा आश्वासनों की, कोई प्रस्ताव लाया जाना हो या स्पष्टीकरण दिया जाना हो, सदैव भाषा का वाचिक स्वरूप ही माध्यम बनता है। ऐसे में राज्य के कुशल संचालन के लिए संसद में भाषा की प्रभावोत्पादकता नितांत वांछनीय हो जाती है।

संसद के भीतर नरेन्द्र मोदी की भाषा की अन्य स्थानों में प्रयुक्त भाषा से भिन्नता के बारे में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में ख्याति प्राप्त विचारक और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के जानकार प्रो. पुष्पेश पन्त कहते हैं– "वे संसद में थोड़ा सोचकर बोलते हैं, चुनावी सभा में दिल–खोलकर बोलते हैं।"

संसद में प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी की भाषा में शब्दों के चयन में विविधता के दर्शन होते हैं। कभी उनके शब्द परिनिष्ठित हिन्दी से आते हें तो तत्क्षण ही वह उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी

शब्दावली से शब्दों को ग्रहण करते हैं। साथ ही अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी निरंतर दिखाई पड़ता है।

- परिनिष्ठित साहित्यक हिन्दी के शब्दों की प्रचुरता– अध्ययन, अपेक्षा, अभिप्राय अभियान, अहंकार आभारी आयाम, आलोचना, उत्तरदायित्व, चरितार्थ, परिव्राजक प्रकट, प्रखर, प्रतिध्वनि, प्रतिबद्धता, विश्लेषण, सम्पदा मूलभूत, वस्तुस्थिति, सद्भावना, सन्दर्भ, स्पर्धा, स्मारक
- हिन्दी शब्द–युग्मों का प्रयोग– अमृत–महोत्सव, आत्म–चिंतन, आलोचना–विवेचना, इच्छा–शक्ति आशाओं–अपेक्षाओं, कार्य–शैली, काल–खण्ड, युग–चक्र, संकल्प–पूर्ति, वस्तु–रूप, सर्व–सम्मति
- प्रत्यय के बने शब्दों का प्रयोग–कलुषित, जागृत, नम्रता, प्रखरता, पीड़ित, प्रतिबिंबित, व्याप्त सहकारिता, सामूहिकता
- तकनीकी शब्दावलियों का प्रयोग– आर्गेनिक स्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर, इनफार्मेशन टेकनोलॉजी, इरिगेशन, एग्रीकल्चर सेक्टर, एग्रो प्रोडक्ट, ट्रेनिंग, न्यूट्रीशनल वेल्यू नेटवर्क, फर्टिलाइजर, मैपिंग, रिसर्च, रियल टाइम डाटा
- अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग– आइडियोलॉजी, ग्लोबमार्किट, डिस्क्रिमिनेशन, न्यूक्लियर, फेडरलिज्म सेटेलाईट, सेनेटाईज, सैनिटेशन
- अंग्रेजी की प्रशासनिक, समाजशास्त्रीय एवं अर्थशास्त्रीय शब्दावली का प्रयोग अमांउट इक्वल, इनिशिएटिव, इन्क्वारी, इम्पैक्ट, इम्पॉसिबल एडवांटेज, आक्शन, कॉन्ट्रिब्यूशन, क्रेडिट, क्लियर, टायलेट, डिजास्टर, परसेप्शन, पालिसी, प्रायोरिटी, प्रोक्योरमेंट, रिचुअल
- हिन्दी में रच–बस गए अरबी–फ़ारसी मूल के शब्दों का प्रयोग– आदम, आन–बान–शान, अंदाज, अमानत, आजादी इंतजार इरादा, उम्मीदवार, ऐतराज, औजार, कतई, कोताही, करीब–करीब नोक–झोंक, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, नौजवान, शक, मकसद, हिन्दुस्तान

संसद के भीतर नरेन्द्र मोदी के शब्द चयन की एक और विशेषता देखने में आती है, वह है पुनरूक्ति। पुनरूक्ति को नीरस एवं बोझिल बनने से रोकने के लिए उनके भाषाई उद्यम अत्यंत रोचक है। पुनरूक्ति में भाषागत वैभिन्य देखने को मिलता है–

"जब Policy Driven State होता है, नीति आधारित व्यवस्थाएँ होती हैं।"[15]

"इस देश का प्रधानमंत्री विदेश गया तो कितना समय कहाँ बिताया, कभी उसकी भी तो जाँच कर लेते, कभी उसकी भी तो पदुनपतल कर लते।"[16]

"हमारे लिए राष्ट्रपति जी का अभिभाषण सिर्फ परम्परा और Ritual नहीं है।"[17]

गाँवों में शहरों की तरह अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध कराने के प्रति सरकार की वचनबद्धता प्रकट करने के लिए, अंग्रेजी शब्दों Rural और Urban के सुंदर सुयोग से नवीन शब्द त्न्त्ठ।छ की व्युत्पत्ति करते हुए वह कहते हैं–

"हमने एक शब्द प्रयोग किया है 'RURBAN'। गाँवों के विकास के लिए, जहाँ सुविधा शहर की हो, आत्मा गाँव की हो।"[18] वह संसद में वक्तव्य, नेतृत्व और कर्त्तव्य के सही समामेलन की आवश्यकता पर बल देते हैं–

"जब तक नेतृत्व, कर्त्तव्य और वक्तव्य तीनों का सही मिलन नहीं होता है तब तक वह शब्द, वह भाव, वह विचार संसद को प्रभावित नहीं कर सकते हैं और न ही देश को प्रेरणा दे सकते हैं।"[19]

इसी बात का भाव्य–साम्य अंग्रेजी में करते हुए वह कहते हैं– "Clarity of thought, faith in conviction and correction in acts" इन तीनों को लेकर हम अगर सदन की गरिमा को बढ़ाना चाहते हैं, अवश्य बढ़ा सकते हैं।"[20]

नरेन्द्र मोदी संसद में अपनी बात को प्रस्तुत करने के लिए दार्शनिक शैली का प्रयोग करते हैं। इसके लिए वह संस्कृत की सूक्तियों एवं काव्य रूपी पंक्तियों का प्रयोग करते हैं–

"राष्ट्र, राष्ट्र अपनी नीति से चलता है अपनी Philosophy से चलता है, Ideology आती है, जाती है और बदलती रहती है। मूल तत्त्व देश को चलाता है और भारत का मूल तत्व है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा काश्चिद दुःख भाग्भवेत्
यह भारत का मूल मंत्र है।"[21]

"सूरज आएगा भी तो कहाँ उसे यही रहना होगा
यहीं हमारी सांसों में हमारी रगो ने, हमारे संकल्पों में
हमारे रतजंगों में, तुम उदास मत हो– तुम उदास मत हो अब मैं किसी भी सूरज को डूबने नहीं दूंगा।"[22]

26 नवंबर 2015 को संसद में संविधान पर हो रही चर्चा में अपने विचार रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विचारों में जितना बदलाव देखा गया उतना ही परिवर्तन उनकी भाषा–शैली में भी दृष्टिगोचर हो रहा था। यह उनकी भाषा–शैली का ही प्रभाव था कि देश के एक प्रमुख अंग्रेजी अखबार ने नरेन्द्र मोदी के इस भाषण का वर्णन करते हुए लिखा– "कई तरह के मुखौटे पहनने में माहिर मोदी यह भाषण देते समय आचार्य नरेन्द्र मोदी जैसे दिख रहे थे।"

इस वक्तव्य पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए साहित्यकार उदय प्रकाश लिखते हैं–

"इतना लोकतांत्रिक समावेशी उदार और विनम्र संभाषण कम से कम इस प्रभावी शैली में मैंने अपने जीवन में नहीं सुना अपनी वक्तता में संभवतः वे सिद्धहस्त स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी से भी कई कदम आगे हैं वे अपने व्याख्यानों में शायद, तथ्यों और इतिहास संबंधी भ्रमों–भूलों और हास्यास्पद गलतियों के बावजूद अब तक के एक बेजोड़ वक्ता प्रधानमंत्री हैं। संविधान की मूल भावनाओं के पक्ष में दिया गया उनका यह भाषण अप्रत्याशित रूप से प्रशंसनीय ही नहीं, सामयिक और महत्त्वपूर्ण था।"[23]

उदय प्रकाश की यह टिप्पणी इसलिए भी विशेष महत्त्व की है कि इस भाषण से महज एक माह पूर्व ही उदय प्रकाश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में देश में बढ़ती कथित 'असहिष्णुता' के खिलाफ कई प्रसिद्ध लेखकों द्वारा चलाए जा रहे 'पुरस्कार वापसी अभियान' की अगुवाई कर रहे थे।

26 नवंबर के इस भाषण में नरेन्द्र मोदी की शब्द–शक्ति के साथ भाषा में दार्शनिकता के दर्शन होते हैं। वह संविधान सरीखे गूढ़ विषय को अपनी व्याख्यापरक शैली में प्रतिपादित करते हैं और शब्दों से अपनी दृढ़ता को भी दर्शाते हैं विभिन्न भाषाओं से सूक्तिपरक सिद्धान्तों को अपने भाषण का आधार बनाते हुए आगे बढ़ते हैं–

स्वभावम् न जहा त्येव साधुरा आपद गतोऽपि सन्
कर्पूर! पावकः स्पर्शः सौरभं लभते तराम्।।

साधु की सच्ची परीक्षा कठिन परिस्थितियों में ही होती है। जैसे– कपूर को आग के पास लाने पर उसे जलने का डर नहीं रहता, वह खुद जलकर अपनी सुरभि से सबको मोहित करता है। A good person never gives up his nature even when he is caught in calamity. Camphor caught with fire emits more fragrance.

उनकी सभी भाषिक विशिष्टताओं के साथ उनकी वाणी की काव्यात्मकता को भाषण के अंतिम अंश में देखा जा सकता है, जहाँ भाषा के बंधनों से मुक्त होकर भी शब्द अपनी सम्प्रेषणीयता सुनिश्चित कर पाते हैं।

My Idia of India– सत्यमेव जयते
My Idia of India– अहिंसा परमो धर्मः
My Idea of India– एकम सद विप्राः बहुधाः वदन्ति सत्य
My Idea of India– पौधों में परमात्मा दिखना
My Idea of India– वसुधैव कुटुम्बकम
My Idea of India– सर्व पंथ समभाव
My Idea of India– अप्प दीपो भवः
My Idea of India– तेन त्यक्तेन भुन्जिथा
My Idea of India–
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
My Idea of India–
न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामूर्तिनाशनम
My Idea of India–
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड परायी जाणे रे
My Idea of India– जन सेवा ही प्रभु सेवा
My Idea of India–
सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहे।
तेजस्वी नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
My Idea of India– नर करनी करे तो नारायण हो जाए।
My Idea of India– नारी तू नारायणी
My Idea of India- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता
My Idea of India–
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
My Idea of India–
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गा दपि गरीयसी"

औपचारिक कार्यक्रमों में भाषा–शैली

लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र और आम आदमी को संबोधित करते समय, विविधता में एकता के प्रदर्शन एवं सबकी सहभागिता के लिए आह्वान आवश्यक होता है। इसके लिए नरेन्द्र मोदी खरे उतरते प्रतीत होते हैं–

"हम सीखते आए है, पुनर्स्मरण करते आए हैं– संगच्छध्वम्" संवदध्वम सं वो मनांसि जानाताम्। हम साथ चले, मिलकर चले, मिलकर सोचे, मिलकर संकल्प करें और मिलकर के हम देश को आगे बढ़ाए।"[24]

मैं देशवासियों को कहता हूँ 'राष्ट्रयाम् जाग्रयाम् वयम् 'Eternal vigilance is the price of

liberty' हम जागते रहे, सेना जाग रही है, हम भी जागते रहे और देश नए कदम की ओर आगे बढ़ता रहे, इसी एक संकल्प के साथ हमें आगे बढ़ना है।"[25]

"भाइयो–बहनों, क्या देश के नागरिकों को राष्ट्र के कल्याण के लिए कदम उठाना चाहिए या नहीं उठाना चाहिए? आप कल्पना कीजिए सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम चले तो यह देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाएगा।"[26]

'ये मेरा क्या और मुझे क्या' इस दायरे से हमें बाहर आना हैं हर चीज अपने लिए नहीं होती है। कुछ चीजें देश के लिए भी हुआ करती हैं और इसलिए हमारे राष्ट्रीय चरित्र को हमें निखारना है। मेरा क्या मुझे क्या उससे ऊपर उठकर देश हित के हर काम के लिए मैं आया हूँ, मैं आगे हूँ, यह भाव हमें जगाना है।[27] विश्व समुदाय का आह्वान हो या विश्व भर में फैले भरतवंशियों का आह्वान, वह उद्योग की वैश्विक भाषा में ही करते है–

"विश्व में पहुँचे हुए भारतवासियों का भी आह्वान करता हूँ कि आज अगर हमें नौजवानों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देना है, तो हमें Manufacturing sector को बढ़ावा देना पड़ेगा। Import-export की जो स्थिति है, उसमें संतुलन पैदा करना हो तो हमें Manufacturing sector पर बल देना होगा.. इसके लिए...विश्व की शक्तियों को भी हम निमंत्रण देते हैं। आइए, हम विश्व को कहें,

Electrical से लेकर Electronic तक ब्यउमए उंाम पद India, Chemicals से लेकर के pharmaceuticals तक Come Make पद India Autombile से लेकर Agro value addition तक come, Make in India paper हो या plastic come make in India satellite हो या submarihe come make in India[28] भारत के अपार सामर्थ्य और वैश्विक नेतृत्व के सन्दर्भ में इसकी संभावनाओं को वह स्वामी विवेकानन्द के एक कथन के माध्यम से सामने रखते है–

"विवेकानन्द जी के शब्द थे– मैं मेरी आँखों के सामने देख रहा हूँ कि फिर एक बार मेरी भारत माता जाग उठी है, मेरी भारत माता जगद्गुरु के स्थान पर विराजमान होगी, हर भारतीय मानवता के कल्याण के काम आएगा, भारत की यह विरासत विश्व के कल्याण के लिए काम आएगी।।[29]

सैनिकों के बीच भाषा–शैली प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र मोदी ने अनेक अवसरों पर सेना के जवानों को संबोधित किया है। सेना के जवानों के साथ वे आत्मीयता से बात करते हुए राष्ट्रवादी शब्दावली का प्रयोग करते है–

"प्रधानमंत्री बनने के बाद मैं पहली बार दिल्ली के बाहर निकला और सीधा आप लोगों के पास पहुँचा हूँ। इससे आप अंदाज कर सकते हैं कि नई सरकारी की क्या है?"[30]

"आप लोग मातृभूमि के लिए अपना घर–बार–गाँव, यार–दोस्त परिवार छोड़ कर के उन कठिन क्षेत्रों में काम करते हैं, जिस कठिनाई का अंदाज सामान्य जीवन जीने वाले नागरिकों को होना बहुत मुश्किल होता है, लेकिन आप ये जो साधना करते हैं, जो तपस्या करते हैं, उसी की बदौलत देश के कोटि–कोटि नागरिक सुख–चैन की जिन्दगी जी सकते हैं।[31]

"मैं आपका हूँ मैं आपके लिए हूँ, आपके बीच हूँ प्रतिपल आपके साथ हूँ, ये विश्वास दिलाने आया हूँ और हम सब मिलकर के माँ भारती की सेवा मे लगे हैं और ऐसे ही भारत माँ की सेवा करेंगे।"[32]

"मैं उन सभी माताओं को भी नमन करता हूँ, जिन्होंने माँ भारती की रक्षा के लिए ऐसे वीर सपूतों को जन्म दिया है संस्कार दिए हैं और जीने–मरने के लिए प्रेरणा दी है।"[33]

सारांश

मनोमस्तिष्क में उपजे विचारों एवं भावों को अपने मौलिक रूप में दूसरे मन तक पहुँचाने के लिए एक सशक्त भाषा की आवश्यकता होती है इतिहास में समुदाय विशेष को एकत्रित कर जनसमूह का नेतृत्व प्राप्त करने के लिए राजाओं मंत्रियों, सेनापतियों, तानाशाहों बागियों ने अपनी वाणी का सफल प्रयोग किया है। इसी तरह सत्ता के केन्द्र तक पहुँचने में नेताओं की वाणी ने सदैव सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया है। प्रकृति प्रदत्त वाणी और मानव द्वारा विकसित भाषा उन शक्तियों में से हैं जिनके बल पर नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री जैसे गरिमामयी पद को सहजता से प्राप्त कर लिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विभिन्न अवसरों पर अपने विचारों को व्यक्त करते रहते हैं। अवसरानुरूप उनकी भूमिका में परिवर्तन आता रहता है। विदेशों में आधिकारिक मुलाकातों के समय उनका व्यवहार एक कूटनीतिज्ञ–सा होता है और भारतीय मूल के लोगों के बीच वह एक सांस्कृतिक अग्रदूत की भूमिका में नजर आते हैं।

विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों में वह एक शिक्षक से दिखायी पड़ते हैं। सैनिकों को उनमें अपना सेनापति दिखता है, तो पार्टी के अधिवेशन में वह परिपक्व राजनेता होते हैं। सार्वजनिक जीवन में प्रायः लोग इन स्थानों पर लिखी–लिखाई बातें कहते हैं, लेकिन नरेन्द्र मोदी इस परिपाटी से अलग अपने मौलिक विचारों को प्रकट करते हैं और भाषा की विशिष्ट शेली से उन विचारों की सम्प्रेषणीयता सुनिश्चित करते हैं। चुनावी रैलियों में उनकी भाषा–शैली परम्परागत चुनावी भाषा–शैली से भिन्न रहती है। यहाँ वे क्षेत्रीय बोली–भाषा का प्रयोग करते हैं। पार्टी के कार्यक्रमों में, कार्यकर्त्ताओं के लिए वे विशिष्ट वक्तृत्व शैली का प्रयोग करते हैं। इसके लिए नए–नए प्रतीकों का प्रयोग करते हैं संसद के संबोधनों में उनके शब्दों में विविधता दिखाई पड़ती है। यहाँ कभी उनके शब्द परिनिष्ठित हिन्दी से आते हैं तो तत्क्षण ही वह हिन्दुस्तानी शब्दावली से शब्दों को ग्रहण करते हैं। वे कभी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के शब्द युग्मों का प्रयोग करते हैं। वह दार्शनिक शैली में संस्कृत की सूक्तियों का प्रयोग करते हैं। उनके द्वारा सैनिकों के बीच प्रयुक्त शब्दावली में राष्ट्रवली में राष्ट्रवादी शब्दों का प्रयोग बहुतायत में होता है। उनकी विशिष्ट शब्दावली में सर्वाधिक प्रयुक्त पाँच शब्द–कालखंड, मानविकी, सामर्थ्य, स्वर्णिम एवं डी.एन.ए. हैं। इसके अतिरिक्त कुछ वाक्यांशों का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है–

- 'एक समय था'
- 'सवा सौ करोड़ का देश'
- 'ये भारत की परम्परा रही है'
- उस दिशा में हम काम कर रहे हैं
- समाज के आखिरी छोर पर बैठा इंसान
- हमारा एक ही संकल्प हैं

इस प्रकार नरेन्द्र मोदी के भाषणों की भाषा के संरचनात्मक स्वरूप का अध्ययन करने के बाद भाषा के प्रश्नात्मक एवं काव्यात्मक होने का संकेत मिलता है। उनके भाषण सोदाहरण और व्याख्यात्मक होते हैं। उनकी शब्द सम्पदा में संस्कृतनिष्ठ तत्रूप शब्दों की प्रचुरता के साथ उर्दू–अरबी–फारसी शब्द भी बहुसंख्या में है। उनकी कविताओं में व्यक्तिवाद के दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष

अतः नरेन्द्र मोदी के भाषा–प्रयोग एवं भाषिक प्रभावोत्पादकता की विशिष्ट भंगिमा को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय राजनीति में नरेन्द्र मोदी का अभ्युदय, अखिल भारत स्तर पर हिन्दी के सफल अनुप्रयोग की आवश्यकता एवं महत्व को प्रतिपादित करता है। इस शोध–पत्र के सार रूप में यह कहा जा सकता है कि 'नरेन्द्र मोदी की भाषा, हमारे समाज के वैविध्य का एक समावेशी प्रारूप है, जो हिन्दी को सर्वसाधारण की भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रति वचनबद्ध है। साथ ही इस शोध पत्र से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि वक्ता के रूप में हम सभी को अपनी भाषिक प्रभावोत्पादक के प्रति सजग रहना चाहिए और यह भाषा की निरंतर सचेष्ट साधना से ही संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. कपिल देव द्विवेदी भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2013, पृ. 3
2. एडी मरीनो, नरेन्द्र मोदी एक राजनीतिक यात्रा (सुधीर दीक्षित द्वारा अनुदित), मंजुल, भोपाल, 2014, पृ. 29
3. किशोर मकवाणा, कामनमेन नरेन्द्र मोदी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृ. 274
4. किशोर मकवाणा, कामनमेन नरेन्द्र मोदी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृ. 33
5. किशोर मकवाणा, कामनमेन नरेन्द्र मोदी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृ. 274
6. लोक सभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा, 27 फरवरी 2015
7. 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, भोपाल 19 सितम्बर, 2015
8. परिवर्तन रैली, दरभंगा बिहार, 02 नवम्बर 2015
9. दिल्ली के द्वारका में आयोजित रैली, 01 फरवरी, 2015
10. दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित रैली, 31 जनवरी 2015
11. प्रभात रंजन, वक्त की माँग– नरेन्द्र मोदी, विकास पब्लिशिंग, नोएडा, 2013, पृ. 62
12. प्रभात रंजन, वक्त की माँग– नरेन्द्र मोदी, विकास पब्लिशिंग, नोएडा, 2013, पृ. 62
13. कार्यकर्ता महाकुम्भ, भोपाल, मध्यप्रदेश, 25–09–2013
14. कार्यकर्ता महाकुम्भ, भोपाल, मध्यप्रदेश, 25–09–2013

15. लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 27 फरवरी, 2015
16 लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 27 फरवरी, 2015
17. लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 11 जून, 2015
18. लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 11 जून, 2015
19. श्रेष्ठ सांसद अवार्ड समारोह, 12 अगस्त 2014
20. श्रेष्ठ सांसद अवार्ड समारोह, 12 अगस्त 2014
21. लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 27 फरवरी, 2015
22. लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर, 7 फरवरी, 2019
23. श्री उदय प्रकाश की फेस बुक पोस्ट, 27 नवम्बर, 2015
24. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
25. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
26. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
27. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
28. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
29. लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन, 15 अगस्त 2014
30. भारतीय नौ सेना पोत विक्रमादित्य, 14 जून 2014
31. श्री नगर में अत्यधिक ऊँचाई के क्षेत्रों में सेवारत सैनिकों के बीच, 4 जुलाई 2011
32. सिया चीन में सैनिकों के बीच दीपावली, 23 अक्टूबर, 2014
33. लेह में सैनिकों एवं वायु सैनिकों के बी, 12 अगस्त, 2014,